उपसंहार

उपसंहार

साहित्यकार के अध्ययन, चिंतन, मनन और अनुभवों का निचोड़ साहित्य होता है । इसी कारण साहित्यकार के व्यक्तित्व की झलक उसके साहित्य में देखने को मिलती है । अतः प्रथम अध्याय में डॉ. शंकर शेष के जीवन तथा साहित्य का परिचय कराया गया है ।

शंकर शेष का जन्म मध्यप्रदेश राज्य के बिलासपुर गाँव में सामंतशाही महाराष्ट्रीय परिवार में 2 अक्तुबर, 1933 में हुआ । उनकी प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा बिलासपुर में हुई । उच्चशिक्षा के लिए वे नागपुर के मॉरिस कॉलेज में दाखिल हुए । कॉलेज के जीवन में ही शंकर शेष ने नाटक लिखना प्रारंभ किया था । बी.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद मॉरिस कॉलेज में ही अधिव्याख्याता बन गये । अध्यापक बन जानेपर 19 दिसंबर, 1958 को उनका विवाह रायपुर के डॉ रामचंद्र नारायण अत्रे की सुकन्या सुधा जी से हुआ । अध्यापन का कार्य करते हुए शेष ने सन 1961में नागपुर विश्वविदयालय से ही पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त कर ली । अतः शंकर शेष आजीवन अध्ययन और अध्यापन करते रहे ।

शेष का जीवन नौकरियों की दृष्टी से भी वैविध्यपूर्ण रहा है । बी.ए. की उपाधि के बाद नागपुर के मॉरिस कॉलेज में अधिव्याख्याता बने । फिर वहाँ से रीवाँ, शहडोल के कॉलेज में भी अध्यापन का कार्य किया । शेष की असाधारण क्षमता को देखकर मध्यप्रदेश सरकार ने उनकी नियुक्ति शिक्षा सेवा विभाग में " आदिम जाति कल्याण " विभाग में अनुसंधान अधिकारी के रूप में की । फिर भोपाल के हमदिया कॉलेज में दो वर्ष अध्यापन किया । सन 1970 में सरकार ने उनकी प्रतिनियुक्ति " मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी " के सहायक संचालक रूप में की । सन 1974 तक शंकर शेष इस पद पर बने रहे । फिर इससे इस्तीफा देकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बंबई कार्यालय में राजभाषा विभाग के मुख्याधिकारी बने और अंत तक इसी पद पर बने रहे ।

सन 1981 में बंबई के कोलाहल से दूर दीवाली की छुट्टियाँ मनाने के हेतु सपरिवार कश्मीर गये थे । लेकिन श्रीनगर में ही 20, अक्तुबर 1981 में दिल का दौरा पडने से उनकी मृत्यु हुई। यह वज्रपात केवल उनके परिवार पर ही नहीं बल्कि सगे -- संबधियों, मित्रों, उनके साहित्य प्रेमिओं तथा हिंदी साहित्य जगत पर भी था । अतः इस प्रतिभाशाली व्यक्ति को काल के क्रूर हाथों ने अपना ग्रास बनाया ।

शंकर शेष का जीवन सादगी से भरा हुआ था । वह मिलनसार व्यक्ति होने के कारण जो भी उनके संपर्क में आता उनका ही बन जाता । उनमें आत्मसुधार की भावना थी। वह अपने मित्रों तथा विद्यार्थियों में भी प्रिय थे । वे अपनी कार्यकुशलता से " अनुसंधान अधिकारी " तथा राजभाषा विभाग

के "मुख्याधिकारी " बने । फिर भी उन्होंने प्रशासक की जिम्मेदारी निभाते हुए कभी इंसानियत, ममता तथा वात्सल्य के भाव को नहीं छोड़ा ।

पारिवारिक जीवन में डॉ शेष संवेदनशील पति तथा वात्सल्यमयी पिता थे । उन्होंने अपने पारिवारिक जिम्मेंदारियों को बखूबी निभाया । उनका मित्र परिवार भी काफी बड़ा था । सब मित्रों के शंकर शेष चहेते थे । श्रेष्ठ तथा उच्च अधिकारी बनने पर भी उन्होंने अपनी इंसानियत नही छोड़ी। अतः उनका व्यक्तित्व संवेदनशील था ।

डॉ. शंकर शेष ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा के जरिए साहित्य का सृजन किया है । अतः उनके समग्र साहित्य में --

1) नाटक,

2) एकांकी,

3) उपन्यास,

4) कहानी,

5) अनुसंधान,

6) चलचित्र,

7) अनुवाद,

8) तथा अन्य विधाएँ -- जिनमें कविता, बालसाहित्य, लेखन का समावेश हुआ है ।

अनुसंधाता, प्राध्यापक, सफल प्रशासक, भाषविद् तथा जिंदादिली से भरपूर यह व्यक्तित्व हमेशा सृजनशील रहा। नाटककार, एकांकीकार, उपन्यासकार, कहानीकार, चलचित्र तथा कथा संवाद -- लेखक, अनुवादक आदि रूपों में उनकी प्रतिभा निखरती, फलती -- फूलती रही । हिंदी साहित्य में शेष ने किया यह बेजोड़ योगदान हमेशा के लिए अमर रहेगा। इनके साहित्य की ज्योति हमेशा सबको रास्ता दिखाती रहेगी ।

द्वितीय अध्याय में शंकर शेष के नाटकों की नायिकाओं के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । आधुनिक हिंदी नाटक की व्यापकता को देखते हुए नाटक की नायिका को किसी परिभाषा में बद्ध करना मुश्किल है । फिर भी नाटक के कथानक के विकासक्रम में प्रमुख स्थान रखनेवाली और नाटक को फलागम की ओर ले जानेवाली स्त्री पात्र को हम नायिका कह सकते हैं । शंकर शेष के कुछ नाटक नायिका प्रधान है । पर जो नाटक नायक प्रधान हैं उसमें मैंने नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र को नायिका माना है । अतः शंकर शेष के नाटकों की नायिकाओं का शैक्षिक,वर्गीय, प्रेमिका और आर्थिक दृष्टि से

विभाजन कर उनके स्वरूपों का विवेचन किया गया है । शैक्षिक दृष्टि से विवेचन करने पर पता चलता है कि शेष के नाटकों की नायिकाएँ शिक्षित और अशिक्षित दोनों रूपों में मिलती है । जिसके जरिए स्त्री के शिक्षित होने के महत्व को बताने का प्रयास किया है । वर्गीय दृष्टि से अध्ययन करने पर पता चलता है कि उनकी नायिकाएँ सभी वर्गों से संबंधित है । जिसके द्वारा उन्होंने उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग में स्थान रखनेवाली स्त्रियों की जिंदगी के हर पहलू को उद्घाटित करने की कोशिश की है तथा उनकी समस्याओं का उद्घाटन किया है । नायिकाओं के प्रेमिका स्वरूप को देखने के बाद पता चलता है कि शेष ने प्रेम जैसी तरल भावना का बखूबी चित्रण अपने नाटकों में किया है । प्रेम में निर्माण होनेवाली अनेक बाधाओं का भी चित्रण किया है । आर्थिक दृष्टि से नायिकाओं के स्वावलंबी और परावलंबी इन दो स्वरूपों में अध्ययन करने के बाद नजर आता है कि शेष ने तत्कालीन समाज में होनेवाले स्त्री के स्थान का यथार्थ चित्रण किया है । जिसके जरिए समाज को स्त्री शक्ति के प्रति जागृत करने का प्रयास किया है । खुद स्त्री को भी उसकी शक्ति तथा सत्व के प्रति सजग किया है । जिसके जरिए नारी को अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा मिलती हैं ।

तृतीय अध्याय में शेष के नाटकों में चित्रित नायिकाओं की विशेषताओं का उद्घाटन किया है । जिससे हमें पता चलता है कि शेष ने नारी के विविध गुणों का चित्रण अपने नाटकों में किया है । ज्यादातर नारी के सकारात्मक रूप को दर्शाया है । वह संघर्षशील, स्वाभिमानी, क्षमाशील, कर्तव्यनिष्ठ, आशावादी है । वह मुश्किलों से सामना करने में विश्वास रखती है । अपने चारित्र्य के प्रति सजग, व्यवहार चतुर, अपने पति से असीम प्यार करनेवाली नायिकाएँ अपने गृहस्थी को जी - जान से सँभालती हुई नजर आती है । यह नायिकाएँ हिंदू स्त्री के सोशिक रूप को उजागर करती है । कुछ नायिकाएँ दृढशील दिखाई देती है जिन्होंने अपनी शक्ति से ना केवल राज्य का तख्ता पलट दिया है बल्कि क्रांति की ज्वाला सुलगायी है । अतः शेष ने अपने नाटकों के जरिए जिंदगी के हर क्षेत्र में स्त्री के महत्व को बताने की कोशिश की है । जो हमें जीने की प्रेरणा देती है साथ ही मुश्किलों से लड़ना सिखाती है ।

चतुर्थ अध्याय में नायिकाओं की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है । जिसके अध्ययन से पता चलता है कि शेष ने नारी जीवन की ज्यादा से ज्यादा समस्याओं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है । जिनमें पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं के साथ आर्थिक,राजनीतिक,नैतिक तथा दाम्पत्य जीवन में आनेवाली समस्याओं का भी चित्रण किया गया है । इन समस्याओं का उद्घाटन कर समाज को स्त्री जीवन के हर पहलू से अवगत कराया है । स्त्री के प्रति समाज के लोगों को सोचने के लिए बाध्य किया है,जो यह समझ लें कि स्त्री केवल शोषित का रूप नहीं जिसे सदियों से यह पुरूष प्रधान

समाज अपने इच्छाओं के आगे कुचलता आया है । अगर स्त्री ठान ले तो खुद की तकदीर के साथ -साथ देश की तकदीर भी बदल सकती है । अतः शेष जी ने स्त्री के अनेक समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किये है ।

मेरे लघु शोध -- प्रबंध की मौलिकता यह है कि ----

1) प्रस्तुत लघु शोध -- प्रबंध में शंकर शेष के नाटकों की नायिकाओं को केंद्र में रखकर उनका विशेष अध्ययन किया गया है ।

2) इसमें आलोच्य नाटकों की नायिकाओं का सूक्ष्मता से अध्ययन करके उनके स्वरूपों का चित्रण हुआ है ।

3) आलोच्य नाटकों की नायिकाओं के जरिए नारी की विविध विशेषताओं का विवेचन किया गया है ।

4) आलोच्य नाटकों के नायिकाओं के जरिए नारी की अनेक समस्याओं को उजागर किया गया है ।

अध्ययन की नयी दिशाएँ :

1) शंकर शेष के नाटकों में चित्रित स्त्री -- पुरूष संबंध ।

2) शंकर शेष के नाटकों में चित्रित नारी ।

3) शंकर शेष के नाटकों में चित्रित समाज जीवन ।

4) शंकर शेष के नाटकों में अंकित प्रेम चित्रण ।

उपर्युक्त विषयों को लेकर शोध किया जा सकता है ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट : एक

डॉ. शंकर शेष के नाटक

नाम	लेखनकाल	प्रकाशक	प्रकाशनकाल
1) मूर्तिकार	सन 1955	आर्य बुक डेपो, नई दिल्ली	सन 1972
2) नई सभ्यता के नये नमुने	सन 1956	किताबघर, नई दिल्ली	सन 1990
3) रत्नगर्भा	सन 1956	जगतराम एण्ड सन्स, दिल्ली	सन 1984
4) बेटोंवाला बाप	सन 1958	अनुपलब्ध	
5) तिल का ताड़	सन 1958	किताबघर, नई दिल्ली	सन 1990
6) बिन बाती के दीप	सन 1968	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1985
7) बाढ़ का पानी	सन 1968	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1984
8) बंधन अपने अपने	सन 1969	अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद	सन 1973
9) खजुराहो का शिल्पी	सन 1970	अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद	सन 1972
10) फंदी	सन 1971	अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद	सन 1978
11) एक और द्रोणाचार्य	सन 1971	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1983
12) कालजयी (मराठी -हिंदी)	सन 1973	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1987
13) घरौंदा	सन 1974	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1978
14) अरे ! मायावी सरोवर	सन 1974	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1981
15) रक्तबीज	सन 1976	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1982
16) पोस्टर	सन 1977	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1983
17) राक्षस	सन 1977	किताबघर, नई दिल्ली	सन 1990
18) चेहरे	सन 1978	सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1983
19) कोमल गांधार	सन 1979	पराग प्रकाशन, दिल्ली	सन 1983
20) आधी रात के बाद	सन 1981	आर्य प्रकाशन मंडल,दिल्ली	सन 1983
21) त्रिकोण का चौथा कोण		अप्रकाशित - अनुपलब्ध	

परिशिष्ट - दो

शंकर शेष के नाटकों को प्राप्त विविध पुरस्कार

1) मूर्तिकार : श्रीनगर की नाटक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित ।

2) बिन बाती के दीप : 3 जनवरी, 1988 को महाराष्ट्र राज्य नाट्य प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार ।

3) बाढ का पानी : मध्यप्रदेश सरकार के नाट्यलेखन प्रतियोगिता में सात हजार रूपये का पुरस्कार ।

4) बंधन अपने - अपने : मध्यप्रदेश सरकार का ग्यारह सौ रूपये का प्रथम पुरस्कार नाट्य लेखन प्रतियोगिता में प्राप्त ।

5) एक और द्रोणाचार्य : कलकत्ता की अनामिका नाट्य संस्था ने 1975 की श्रेष्ठ नाट्यकृती घोषीत किया ।

6) पोस्टर : सुवर्ण महोत्सवी प्रयोग में नया किर्तीमान स्थापित किया । 8 जनवरी, 1988 में महाराष्ट्र राज्य नाट्य स्पर्धा में तीन हजार का प्रथम पुरस्कार ।

7) घरौंदा : फिल्म को आशीर्वाद पुरस्कार प्राप्त ।

8) दूरियाँ : फिल्म का सर्वश्रेष्ठ " फिल्म फेअर " पुरस्कार और आशीर्वाद पुरस्कार ।

9) कोमल गांधार : साहित्य कला परिषद, दिल्ली द्वारा " कोमल गांधार " पुरस्कृत ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ.नं. लेखक / संपादक का नाम	पुस्तक या ग्रंथ का नाम	प्रकाशन एवम् प्राप्त संस्करण
अ) आधार ग्रंथ		
1) सं. डॉ.विनय	" शंकर शेष रचनावली " खंड 1से 4	किताबघर, 24/4866, शीलतारा हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -2 । प्रथम संस्करण -1990
2) शेष शंकर	" एक और द्रोणाचार्य "	पराग प्रकाशन, 3/ 114 कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा,दिल्ली -2 । संस्करण - 1993
3) शेष शंकर	" कोमल गांधार "	पराग प्रकाशन, 3/ 114 कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा,दिल्ली -2 । प्रथम संस्करण - 1997
ब) समीक्षात्मक ग्रंथ		
1) ओझा माधान्ता	" हिन्दी समस्या नाटक "	नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज,दिल्ली । संस्करण 1968
2) गौतम रमेश	" मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक "	नचिकेता प्रकाशन, 7/ 19 ए, विजयनगर दिल्ली - 110009 । प्रथम संस्करण - 1989
3) गौतम रमेश	" हिन्दी के प्रतीक नाटक "	नचिकेता प्रकाशन, 9 / 87 गली नं. 4, मुलतानी 6151 पहाडगांव, नई दिल्ली -110055 ।
4) डॉ.गौतम सुरेश डॉ.गौतम वीणा	" राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष "	शारदा प्रकाशन, 16, एफ / 3, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -2 । प्रथम संस्करण -1986

5) डॉ. गौतम वीणा	" आधुनिक हिन्दी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना "	विजयकुमार शर्मा, संजय प्रकाशन, अशोका विहार, दिल्ली - 52 प्रथम संस्करण 1982
6) डॉ. गुप्ता चमनलाल	" यशपाल के उपन्यासः सामाजिक कथ्य "	शारदा प्रकाशन, 16 / एफ--3, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -2 । प्रथम संस्करण -1986
7) डॉ.अर्जुन चव्हाण	" राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन "	राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड, 2138, अंसारी मार्ग, दरियागंज, दिल्ली -2 । प्रथम संस्करण 1995
8) डॉ. जाधव प्रकाश	" डॉ शंकर शेष का नाटक साहित्य "	साहित्य रत्नालय, 37/50, गिलिस बाजार, कानपुर - 208001 । संस्करण 1988
9) डॉ. जाधव प्रकाश	" रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष "	विकास प्रकाशन, 127/ 145,w-1, साकेत नगर,कानपुर - 208014 । प्रथम संस्करण - जुलई 1990
10) डॉ. नगेंद्र	" रीतिकाव्य की भूमिका "	नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, चंद्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली - 7 । पंचम संस्करण 1964
11) तनेजा जयदेव	"नयी रंग चेतना और हिन्दी नाटककार "	तक्षशिला प्रकाशन, 23/ 4762, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -2। प्रथम संस्करण - 1994

12) डॉ. मलिक शान्ति	" नाटय सिद्धान्त विवेचन "	ज्ञानभारती, 4/14, रूपनगर, दिल्ली -110007 । प्रथम संस्करण 1994
13) डॉ.मंजनबैल सुनीता	" शंकर शेष व्यक्तित्व एवं कृतित्व "	विकास पेपरबैक्स, iX/221, मेनरोड, गांधीनगर, दिल्ली - 31, । प्रथम संस्करण -1997
14) डॉ.श्रीमती पिंपलापुरे	" मोहन राकेश का नारी संसार "	प्रकाशन संस्थान, 4715 / 21, दयानंद मार्ग,दरियागंज,नयी दिल्ली-2। प्रथम संस्करण 1987
15) डॉ.पुष्पलता	" रीतिकालीन शृंगारिक सतसईयों का तुलनात्मक अध्ययन "	तक्षशिला प्रकाशन, डब्लु .बी 27, शक्करपुर, दिल्ली - 110051 ।
16) डॉ.लवटे सुनीलकुमार	" नाटककार शंकर शेष "	संजय प्रकाशन, 2072 सी, शनिवार पेठ, कोल्हापुर - 416002 । प्रथम संस्करण - 1982
17) रस्तोगी गिरीश	" समकालीन हिन्दी नाटककार "	इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के - 71, कृष्णनगर, दिल्ली - 11051 ।
18) डॉ.रीताकुमार	" स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकः मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में "	विभू प्रकाशन,सी, श्याम एन्क्लेप, ज्ञानी बॉर्डर साहिबाबाद - 201005 । प्रथम संस्करण 1980
19) डॉ.राय नरनारायण	" आधुनिक हिन्दी नाटक एक यात्रा दशक "	भारतीय भाषा प्रकाशन, 518 / 6 बी, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली - 2 । प्रथम संस्करण 1979

20) वर्मा प्रभा	" हिन्दी उपन्यासः सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप "	बी.के. तनेजा, क्लासिकल पब्लिशिंग,कंपनी, 28,शापिंग सेन्टर, करमपुरा, नई दिल्ली -110015 । प्रथम संस्करण 1990
21) डॉ.हंस सूतदेव	" उपन्यासकार चतुरसेन के नारी पात्र "	भारतीय ग्रन्थ निकेतन, 133, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली -10006 । प्रथम संस्करण 1974
22) हसम्नीस मधुकर	" प्रयोगशील नाटककार डॉ शंकर शेष "	सौ. आशा हसमनीस, 'सावली ' इस्लामपूर, जि.सांगली प्रथम संस्करण 1996
23) डॉ.शर्मा सूरजकान्त	" हिन्दी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण "	एस.ई.एस.बुक कम्पनी, 8153 / 2, चाह इंदारा, फव्वार, दिल्ली - 6 । प्रथम संस्करण - 1973
24) डॉ.सूरी योगेश	" यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ "	चंद्रलोक प्रकाशन, 128/106 जी ब्लाक, किदवईनगर, कानपुर -205011 । प्रथम संस्करण 1994
25) डॉ भानुदेव शुक्ल	" नया हिन्दी नाटक "	जयभारती प्रकाशन, 447,पीली कोठी,नयी वस्ती,कीडगंज, इलाहाबाद - 3 । प्रथम संस्करण - 1993

क) शोध प्रबंध

शोध छात्रा का नाम	प्रबंध का नाम	विश्वविदयालय एवं प्रस्तुत वर्ष
1. डॉ.मधुकर हसमनीस	"डॉ. शंकर शेष के नाटकों का अनुशीलन "	शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हापुर सितम्बर,1988
2. श्री. शिवाजी पोवार	"डॉ. शंकर शेष के घरौंदा नाटक का कथ्य और शिल्प "	शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर 31दिसम्बर,1994